विजेता जागो प्रार्थना कैलेंडर- सितंबर 2023

1.भरोसेमंद बनें--"बहुत से मनुष्य अपनी वफ़ादारी का प्रचार करते हैं, परन्तु भरोसेमंद मनुष्य कौन पा सकता है?" (नीति 20:6) हमारी पसंद और आदतें हमारे चरित्र को निर्धारित करती हैं। जैसे ही आप परमेश्वर को अपने जीवन के हर क्षेत्र पर शासन करने की अनुमति देते हैं, आपका जीवनसाथी और बच्चे सुरक्षित रहेंगे और आपके नेतृत्व पर भरोसा करेंगे। "कोई भी व्यक्ति किसी भरोसेमंद पड़ोसी के पास एक अतिरिक्त चाबी छोड़ सकता है।"

2. लचीला बनें -“तू जो प्यादों ही के संग दौड़कर थक गया है तो घोड़ों के संग कैसे बराबरी कर सकेगा? यर्मि 12:2 यदि तुम शान्ति के देश में गिरोगे, तो यरदन के जंगल में क्या करोगे?” विपरीत परिस्थितियों से लड़ें और वीर एवं आस्थावान व्यक्ति बनें।

3. क्षमाशील बनें– “इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।” (मत्ती 6:14-15)। परमेश्वर की स्तुति करो कि मसीह ने हमारे लिए क्रूस पर क्रूर मृत्यु सहकर हमें हमारे पापों से छुटकारा दिलाया। पिता को कहें कि वह आपको क्षमा कर दे जैसे आप उन लोगों को क्षमा करते हैं जो आपके विरुद्ध दोषी हैं और आपको घर में वापस स्वीकार कर लें।

4. नैतिक बनो– “व्यभिचार से बचे रहो। जितने अन्य पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है।” (1 कुरिं 6:18.20)। ऐसी संस्कृति में सावधान रहें जो कामुकता को बढ़ावा देती है। याद रखें, आपका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है। आप अपने नहीं बल्कि मसीह के हैं। "अपने शरीर में परमेश्वर की महिमा करो।"

5. उनकी उपस्थिति में रहना -प्रिय प्रभु यीशु, मैं पहले सोचता था कि मुझे केवल आपकी ज़रूरत तब है जब चीजें खराब हो जाती हैं, लेकिन अब मुझे पता है कि मुझे हर पल आपकी ज़रूरत है। इसके अलावा, चूँकि अब आप मुझमें निवास करते हैं, मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास भी आप हैं। अपने आप को मेरे साथ एक अटूट बंधन में जोड़ने के लिए धन्यवाद। आपकी उपस्थिति मुझमें स्थायी रूप से निवास करती है। (रोमि 8:9)

6. अनुग्रह - "भोर को मुझे अपनी करूणा सुनने दो" (भजन 143:8)। परमेश्वर की वफादारी और उसका अनुग्रह हर दिन नया और ताजा है। दिन लंबा होने पर भी वह कभी ख़त्म नहीं होती। आप हर तरह से उस पर भरोसा कर सकते हैं।

7. दिशा-"मुझे वह मार्ग बता दे जिस पर मुझे चलना चाहिए; क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ।" (भजन 143:8बी)। जैसे ही आप ईश्वर से बात करेंगे, वह आपको बताएगा कि आपका अगला कदम क्या होना चाहिए। यीशु के नाम पर, आप उन भले कामों को करने में सक्षम होंगे जिन्हें उसने आपके लिए पहले से ही तैयार किया है। (इफि 2:10)

8. छवि वाहक - "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार उसने उसे उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने उन्हें उत्पन्न किया" (उत्पत्ति 1:27। स्त्री और पुरुष दोनों ही परमेश्वर की छवि रखते हैं। यह याद रखना कितना महत्वपूर्ण है कि जब हम एक-दूसरे का सम्मान और सेवा करते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा के लिए करते हैं।

9. विशेष भूमिका-"तब प्रभु परमेश्वर ने उस मनुष्य को ले कर अदन की वाटिका में खेती करने और उसकी रक्षा करने के लिये रख दिया" (उत्पत्ति 2:15)। परमेश्वर की कृपा हम पुरुषों को महिलाओं की तुलना में एक अलग भूमिका प्रदान करती है। यदि हम मनुष्य अपनी भूमिका को पहचानें और उसका सम्मान करें और इसके माध्यम से ईश्वर की सेवा करें तो मैं निश्चित रूप से एक आशीष हूं।

10. इसे आगे बढ़ाएँ - "और मैं तुम्हें आशीष दूंगा... और इसलिए तुम भी आशीष बनोगे" (उत्पत्ति 12:2)। इज़राइल में इसका जीता जागता उदाहरण गलील सागर और मृत सागर के बीच का अंतर है। दोनों को एक ही नदी मिलती है. गलील का सागर पानी को आगे पहुँचाता है और जीवित है। मृत सागर ऐसा नहीं है. मैं अपने जीवन की तुलना किससे करूँ?

11. सत्य - "यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)। शब्दकोष सत्य को तथ्य और वास्तविकता के अनुरूप होने के रूप में परिभाषित करता है। सत्य में बहुत कुछ है जिस तक हम शायद कभी पहुंच सकते हैं। यीशु मसीह को अपने मन और हृदय को उसकी शाश्वत वास्तविकता के लिए खोलने की अनुमति दें।

12. निर्माता - "क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को झूट से बदल दिया, और सृजनहार की अपेक्षा सृजी हुई वस्तु की उपासना और सेवा करने लगे" (रोमियों 1:25)। आदम और हव्वा ने यह झूठ मोल लिया कि वे अपने रचयिता के समान होंगे और उन्होंने परमेश्वर की अवज्ञा की। ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर के सत्य को जानकर और उसका पालन करके सृष्टिकर्ता का सम्मान करता हो।

13. जुनून - जुनून एक मजबूत और बमुश्किल नियंत्रित करने योग्य भावना है। लाखों वेबसाइटें पुरुषों को अवैध यौन इच्छाओं के आगे झुकने के लिए लुभाती हैं। जब परमेश्वर मनुष्यों को उनके जुनून के हवाले कर

देता है तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उन्होंने यौन अनैतिकता से भागने की उसकी चेतावनी का पालन नहीं किया है। (रोमि 1:26.27) सतर्क रहें और शुद्ध योद्धा बनने का निर्णय लें।

14. अनैतिकता - "परन्तु तुम्हारे बीच में व्यभिचार, या किसी प्रकार की अशुद्धता या लोभ का लेशमात्र भी न होना चाहिए, क्योंकि ये परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिये अनुचित हैं" (इफि 5:3)। खुद के साथ ईमानदार हो। शुद्ध होने के लिए लड़ो. लेकिन कामुकता को वर्जित न बनाएं। बल्कि अपने बच्चों और अन्य पुरुषों को ठीक से व्यवहार करने में मदद करें।

15. बुद्धि - "परमेश्वर का भय बुद्धि का प्रारम्भ है; मूर्ख बुद्धि और शिक्षा का तिरस्कार करते हैं" (नीत 1:7)। "हे प्रभु, जब तक आप एक शक्तिशाली आध्यात्मिक पुनरुत्थान नहीं भेजेंगे, मनुष्य आपसे कैसे डरना शुरू कर सकते हैं? कृपया, सृष्टि में अपने शक्तिशाली कार्यों को देखने के लिए अंधों की आंखें खोलें और मुझे अपने प्यार और मुक्तिदायक अनुग्रह का गवाह बनने के लिए उपयोग करें।

16. क्षमा - "हे परमेश्वर, कभी-कभी मैंने महसूस किया है कि मैं आपकी क्षमा के योग्य नहीं हूँ। लेकिन अब, मुझे एहसास हुआ कि क्रूस का मतलब ही यही है। जब मसीह मेरे लिए मरे, तो आपकी दया और अनुग्रह मुझे उपलब्ध हुए। मेरे सभी पापों को क्षमा करने के लिए धन्यवाद। मैं इस अमूल्य उपकार के लिए बहुत आभारी हूँ। इसलिए, अब मैं खुद को माफ कर देता हूं। (इफि 1:7)

17. एक स्वर्गीय मीरास - "प्रिय प्रभु, मैं बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे स्वर्गीय मीरास प्रदान की। मैं मसीह के साथ संयुक्त-वारिस होने पर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। अब मैं जानता हूं कि जब मैंने मसीह पर भरोसा रखा, तो आप मेरे जीवन में आये और मुझसे जुड़ गये। मेरी विरासत आप हैं, प्रभु यीशु। मेरे पास वह सब कुछ है जो मुझे आपमें चाहिए।" (इफि 1:11-12)

18. वादा -"स्वर्गीय पिता, मेरे मसीह में विश्वास करने के कारण मुझे वादा किया हुआ पवित्र आत्मा भेजने के लिए धन्यवाद। अब चूँकि मसीह में जीवन की आत्मा मुझमें वास करती है, मुझे अपनी अंतिम मुक्ति का आश्वासन है और मैं आप में सुरक्षित हूँ। आपकी महिमा अब मेरे माध्यम से प्रकट हो सकती है। मुझे अपने जीवन का आशीर्वाद देने के लिए आपकी स्तुति करता हूँ!" (इफि 1:13-14)

19. प्रकाशन - "प्रिय परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे मसीह के ज्ञान में बुद्धि और प्रकाशन की आत्मा प्रदान करें। मैं आप पर भरोसा करता हूँ, पवित्र आत्मा, कि आप मेरे सामने मसीह को प्रकट करोगे।

मुझे मेरी पहचान और मसीह में मेरी आध्यात्मिक विरासत के बारे में बताएं। मसीह को मेरे सामने प्रकट करो। इसलिए मैं अपने जीवन के हर क्षेत्र में उनकी उपस्थिति का अनुभव कर सकता हूं। (इफि 1:17)

20. आत्मज्ञान -"पवित्र आत्मा, मेरी आँखें खोलो ताकि मैं आपके वचन से अद्‌भुत चीजें देख सकूं। आपकी महान शक्ति के बारे में मेरी समझ को प्रबुद्ध करें। इस अद्‌भुत शक्ति को मेरे सामने प्रकट करें, जो अब मेरे लिए मसीह में उपलब्ध है। मुझे आपके राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सशक्त बनाएं। दूसरों को मुझमें यीशु देखने दो!" (इफि 1:18-19)

21. प्रार्थना -"प्रिय प्रभु, मैंने अपनी समस्याओं को ठीक करने और अपने जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश की है, लेकिन यह कभी काम नहीं आया। अब मैं जानता हूं कि मेरी एकमात्र आशा आप ही हैं, प्रभु। मैं आपके अद्‌भुत उपहार जीवन को बचाने वाले अनुग्रह के लिए आभारी हूं। आपका धन्यवाद कि आपने मेरे लिए अपना जीवन दे दिया ताकि आप अपना जीवन मुझे दे सकें, और मेरे माध्यम से अपना जीवन जी सकें। (गलाति 2:20)

22. वचन - यीशु के शिष्य को अपनी दैनिक लड़ाइयों को जीतने के लिए, बाइबल की शिक्षा को अपने मन और हृदय में संग्रहीत करने की आवश्यकता है। शत्रु इसके विरूद्ध युद्ध करेगा (मत्ती 13.19)। बाइबल की आयतों को याद करने की लड़ाई में धैर्य और दृढ़ता के लिए प्रार्थना करें, और प्रभु जीत देंगे!

23. सामग्री - टेलीविजन, फिल्में, इंटरनेट और अन्य कार्यक्रम, जब ठीक से नहीं चुने जाते हैं तो किसी व्यक्ति के दिल को दूषित कर सकते हैं और इस प्रकार उसके भाषा और कार्यों को प्रभावित कर सकते हैं। वचनबद्ध मनुष्य बनने के लिए प्रार्थना करें। तब आपके पास संस्कृति और परिस्थितियों के नकारात्मक प्रभाव का विरोध करने के लिए उचित उपकरण होंगे। (मत्ती 7.24)।

24. साझेदार-कितनी आशीष की बात है जब पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते हुए एक साथ कई चीजों की योजना बनाते हैं और उन्हें पूरा करते हैं। यह प्रभु की योजना है! इसलिए, अपनी शादी में आपसी साझेदारी और प्रार्थना के लिए समय निकालें। परमेश्वर आपके वैवाहिक जीवन को आशीष देना चाहते हैं और आपको परिवार और दोस्तों के लिए एक आशीष बनाना चाहते हैं। (मत्ती 18.19-20)

25. सुरक्षा-एक पिता के रूप में आप निश्चित रूप से चाहते हैं कि आपके बच्चे स्वस्थ रहें और नुकसान से सुरक्षित रहें। तथ्य यह है कि हम उन्हें बुरी परिस्थितियों से बचाने के लिए हमेशा उनके करीब नहीं रह सकते। प्रार्थना करें कि स्वर्गीय पिता उन्हें अपनी सुरक्षा और देखभाल में रखें और उसके स्वर्गदूत सभी तरीकों से उनकी रक्षा करेंगे। (मत्ती 18.10)

26. परिवर्तन - बाइबिल में रेगिस्तान की तुलना कठिनाई और परीक्षण के समय से की गई है। लेकिन यह परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को अपने हृदय की खोज करने और ईश्वरीय प्राथमिकताओं को सीखने का अवसर देने का भी नियत समय था। “परमेश्वर, जैसे-जैसे मैं कठिन समय से गुज़र रहा हूँ, क्या मैं आप पर सहारा करना और आपके वचन पर भरोसा करना सीख सकता हूँ।" (दिनांक 8:2)

27. पीढ़ियाँ - माता-पिता और बच्चे वह अनुभव कर सकते हैं जिसे "पीढ़ीगत आशीर्वाद या संघर्ष" कहा जाता है। जब प्रभु के वचन का पालन किया जाता है और पिता का सम्मान किया जाता है, तो यह रिश्ता बच्चों के लिए आशीर्वाद का स्रोत बन जाएगा। (नीति 4:1-4) "परमेश्वर, आपकी बुद्धि और विवेक मेरे बच्चों के साथ मेरे रिश्ते में व्याप्त हो!"

28. शक्ति -नियंत्रण और शक्ति दो धोखा देने वाली ताकतें हैं। सामाजिक न्याय लाने के सभी मानवीय प्रयास इतनी आसानी से सत्ता संघर्ष में समाप्त हो जाते हैं। परमेश्वर का राज्य भिन्न है और उसके शासन पर आधारित है। आज उसकी आत्मा को आपका नेतृत्व करने दें। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, ''न तो पराक्रम से और न बल से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा'' (जक 4:6)

29.मीरास - एक भौतिकवादी समाज संपत्ति और धन के क्षणभंगुर मूल्य से विरासत को मापता है। परमेश्वर के लोग विरासत को ईश्वरीय चरित्र और अच्छे नाम के स्थायी आशीर्वाद से मापते हैं। "एक अच्छा आदमी अपने बच्चों के बच्चों के लिए विरासत छोड़ता है" (नीति 13:22)। वह अच्छा इंसान बनने के लिए प्रार्थना करें.

30. भरोसा -“अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु पर भरोसा रखो और अपनी समझ का सहारा मत लो। अपने सभी तरीकों से उसे स्वीकार करो, और वह तुम्हारा मार्ग सीधा कर देगा” (नीति 3:5.6)। विश्वास रखें कि हमारा परमेश्वर महान है! उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है!

वह केवल एक प्रार्थना दूर है और "उन लोगों की इच्छा पूरी करता है जो उससे डरते हैं।"